

वासुदेव अपरिमेयसुधामन शुद्ध सदोदित सुन्दरिकास्तु
धराधर धारिणवेधुरधर्तः सोधइतिदीधितिबेधइविधातः॥
अधिक वक्त्रं रक्त्रय बोधात छिक्त्रि पिधानं वक्त्रुरं अक्त्रा
केशव केशव शसक वन्दे पाशधरार्चित शूरववेश॥२॥
नारायण अमलकारण वन्दे कारणकारण पूर्ण वरेण्य
माधव माधव साधक वन्दे बाधक बोधक शुद्धसमाधे॥३॥
गोविन्द गोविन्द पुरन्दर वन्दे स्कन्दसनन्दनवन्दितपाद
विष्णो म्रजिष्णो ग्रसिष्णो विवन्दे कइष्णु सदुष्णवधिष्णो सुधइष्णो॥४॥
मधुसूदन दानवसादन वन्दे दैवतमोदन वेदितपाद
त्रिविक्रम निष्क्रम विक्रम सूक्रम सन्क्रमहन्कइतवक्त्र वन्दे॥५॥
वामन वामन भामन वन्दे सामन सीमन शामन सानो
श्रीधर श्रीधर शक्त्रर वन्दे भूधर वार्धर कक्त्ररधारिन॥६॥
हइष्णीकेश सुकेश परेश विवन्दे शरणेश कलेश वलेश सुथेश
पद्मनाभ शुभोद्भव वन्दे सञ्जइतलोकभराभर भूरे॥७॥
दामोदर दूरतरान्तर वन्दे दारितपारगपार परस्मात॥८॥
आनन्दतीर्थमूनीन्द्रकइता हरिगीतिः इयं परमादरतः
परलोकविलोकनसूर्यनिभा हरिभक्तिविवर्धनशौण्डमा॥९॥